साख बनाने में 20 साल लगते है और गंवाने में बस 5 मिनट।
– अज्ञात

टर्मिनेटर का आना

'टर्मिनेटर' के नाम से मशहूर गोटाबाया पूर्व राष्ट्रपति महिंद राजपक्षे के भाई हैं। बड़े भाई के राष्ट्रपति रहने के दौरान उन्होंने रक्षा मंत्री की जिम्मेदारी निभाई थी। अपने देश में उनकी बेहद विवादित छवि रही है।

नीतिन वर्मा

श्रीलंका के राष्ट्रपति चुनाव में गोटाबाया राजपक्षे की जीत से श्रीलंकाई तमिलों और मुसलमानों में मायूसी है, साथ ही भारत की चिंता भी बढ़ गई है। गोटाबाया ने यह एकतरफा जीत निवर्तमान सत्तारूढ़ पार्टी के उम्मीदवार सजीथ प्रेमदासा को लगभग 11 प्रतिशत वोटों से पीछे छोड़कर हासिल की है। 'टर्मिनेटर' के नाम से मशहूर गोटाबाया पूर्व राष्ट्रपति महिंद राजपक्षे के भाई हैं। बड़े भाई के राष्ट्रपति रहने के दौरान उन्होंने रक्षा मंत्री की जिम्मेदारी निभाई थी। अपने देश में उनकी बेहद विवादित छवि रही है। बहुसंख्यक सिंहली बौद्ध उन्हें 'युद्ध नायक' मानते हैं, जबकि अधिकतर तमिल अल्पसंख्यक उन्हें अविश्वास की नजर से देखते हैं।

लिट्टे के खात्मे के लिए उनकी प्रशंसा होती है, जबकि विद्रोही तमिलों को यातना देने, उनकी अंधाधुंध हत्या कराने तथा बाद में पॉलिटिकल मर्डर के सिलसिले को अंजाम दिए जाने के आरोप भी उन पर चस्पा हैं। दरअसल बीते अप्रैल में ईस्टर के मौके पर इस्लामी चरमपंथियों द्वारा किए गए बम धमाकों ने देश का सांप्रदायिक–नस्लवादी ध्रुवीकरण कर दिया। बहुसंख्यक सिंहलियों के भीतर यह भाव मजबूत हुआ कि एक कठोर और आक्रामक नेता ही देश में शांति सुनिश्चित कर सकता है। कई सिंहलियों का मानना है कि अगर गोटाबाया उस समय सत्ता में होते तो ईस्टर के मौके पर हमला नहीं हुआ होता।

दूसरी तरफ श्रीलंका के तमिल और मुसलमान सजीथ प्रेमदासा को पसंद करते हैं। प्रेमदासा को मुख्य रूप से उत्तरी–पूर्वी इलाकों में ही वोट मिले हैं, जहां तमिल आबादी ज्यादा है। इस तरह देश में जातीय विभाजन एक बार फिर गहरा गया है, जिसके निशाने पर पिछले कुछ समय से मुसलमान हैं। कई मुसलमानों का कहना है कि कट्टरपंथी बौद्ध समुदायों ने उनके खिलाफ अभियान चला रखा है। उनके कारोबार का बहिष्कार किया जा रहा है, सड़कों पर खुलेआम उन्हें अपमानित किया जाता है और उनके बच्चों को स्कूलों में खास नामों से बुलाया जाता है। वे मानते हैं कि गोटाबाया की जीत ने उन्हें दहशत में ला दिया है क्योंकि वह बहुसंख्यक हितों को बढ़ावा देते रहे हैं। गोटाबाया पर मुस्लिम विरोधी चरमपंथियों को बचाने का भी आरोप है।

तमिलों के प्रति उनके रवैये को देखते हुए भारत का चिंतित होना स्वाभाविक है लेकिन उससे भी ज्यादा चिंता की बात यह है कि गोटाबाया चीन के खुले समर्थक हैं। श्रीलंका की गृह और विदेश नीति भारत की आंतरिक राजनीति के साथ इसके सुरक्षा व सामरिक हितों को भी प्रभावित करती है। इधर श्रीलंका में चीन की दिलचस्पी बहुत बढ़ गई है। महिंद राजपक्षे के कार्यकाल में वे बहुत नजदीक आ गए थे। हम्बनटोटा बंदरगाह और एयरपोर्ट का ठेका चीन को उसी समय दिया गया था, जिसके पीछे चीन का मकसद भारत को हिंद महासागर में घेरना है। अभी गोटाबाया ने भारत से वादा किया है कि वह तमिलों के प्रति सहानुभूति रखेंगे और भारत के साथ श्रीलंका के सबसे अच्छे रिश्ते बनाए रखेंगे, लेकिन उनके फैसलों पर हमें कड़ी नजर रखनी होगी।

मुक्ति के द्वार

माता अमृतानंदमयी देवी

धर्म-दर्शन

अम्मा को अपने बचपन की कुछ घटनाएं स्मरण हो आयी हैं। अम्मा समुद्र–तट पर रहने वाले एक निर्धन परिवार में जन्मी थीं। अम्मा घर का सारा काम–काज करती थीं। आँगन में झाड़ू लगाते समय, यदि गलती से हमारा पाँव अखब्बार के एक टुकड़े पर पड़ जाता तो हम झुक कर उसे छू कर फिर माथे से लगाते। और यदि हम ऐसा न करते तो हमारी माँ हमारी पिटाई करती। वो हमसे कहती, ष्यह कागज सरस्वती माता है। हमारे यहाँ एक गाय हुआ करती थी। यदि हम उसके गोबर पर पाँव रख देते तो भी इसी प्रकार नमन करते। इस गोबर से घास उगाने के लिए खाद बनती है। गाय घास खाती है, दूध देती है जो हमारे लिए आवश्यक होता है। जब हम घर में प्रवेश करते तो दरवाजे की चौखट पर सीधे पाँव नहीं रखते थे। गलती से रख भी देते तो हमें उसे नमस्कार करना पड़ता था। हमारी माँ हमें यह सब सिखाती थी।

संपादकीय

जैसे कोई महामारी

हमारे लिए इससे शर्मनाक बात और क्या होगी कि भारत में बच्चों के यौन उत्पीड़न की घटनाएं कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रही हैं। इस मामले में सिस्टम की नाकामी देखकर न्यायपालिका को सामने आना पड़ा है। सुप्रीम कोर्ट ने बच्चों के साथ बलात्कार के मामलों पर शुक्रवार को स्वतः संज्ञान लिया। कोर्ट की एक खंडपीठ ने कहा कि इस साल एक जनवरी से 30 जून के बीच देश भर में बच्चों के बलात्कार से जुड़े मामलों में 24,212 एफआईआर दर्ज हुई हैं। इनमें 11,981 मामलों की जांच की जा रही है और 12,231 में चार्जशीट दायर की जा चुकी है। सुनवाई सिर्फ 6,449 मामलों में शुरू हो पाई है। निचली अदालतों ने अब तक 911 मामलों पर फैसला लिया है, जो कुल दर्ज मामलों का लगभग चार फीसदी है।

अदालत ने वरिष्ठ अधिवक्ता वी गिरी से इस मामले में एमिकस क्यूरी (न्यायमित्र) के तौर पर सहयोग करने को कहा। वी गिरी ने अपनी रिपोर्ट में अदालत को बताया कि पॉक्सो एक्ट के प्रावधान लागू करने में सरकारें फिसड्डी साबित हुई हैं। ऐसे मामलों में जांच जल्दी पूरी कर दोषियों को सख्त सजा देने के लिए स्पेशल पॉक्सो कोर्ट स्थापित करनी होगी और स्पेशल पब्लिक प्रॉसिक्यूटर नियुक्त करने होंगे। सचाई यह है कि कानून सख्त किए जाने के बावजूद अपराधियों में उसका कोई खौफ नहीं पैदा हो सका है। हमारा तंत्र सक्षम नहीं है इसलिए ऐसे मामलों में अपराध साबित होने की दर बहुत कम है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि साल 2016 में 'पॉक्सो ऐक्ट' के तहत बच्चों से बलात्कार के 64,138 मामले दर्ज हुए थे जिनमें सिर्फ 3 प्रतिशत में अपराध साबित हुआ। जाहिर है, हमारे पास समस्या से निपटने के लिए पर्याप्त मशीनरी नहीं है।

भारतीय रक्षा मंत्रालय की सालाना रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान अपने परमाणु हथियारों और मिसाइलों में तेजी से इजाफा कर रहा है।

न्यूक्लियर पाकिस्तान

संगम शाह

जब पाकिस्तान ने अपने हवाई क्षेत्र को सभी तरह की असैन्य उड़ानों के लिए खोल दिया है। इसके साथ ही फरवरी में भारतीय वायुसेना द्वारा बालाकोट आतंकी ठिकाने पर की गई कार्रवाई के बाद पाकिस्तानी हवाई क्षेत्र में भारतीय उड़ानों पर लगा प्रतिबंध समाप्त हो गया है। इससे सबसे ज्यादा लाभ एयर इंडिया को होगा क्योंकि फरवरी से लेकर अब तक अपनी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों, खासकर अमेरिका और यूरोप जाने वाली उड़ानों को दूसरे रास्ते से ले जाने के कारण उसे करीब 491 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। जाहिर है, पाकिस्तान के इस कदम से भारत को राहत मिली है।

द्विपक्षीय संबंधों की बहाली की दृष्टि से इसे अहम माना जा सकता है। लेकिन रिश्तों का सामान्य होना इतना आसान नहीं है क्योंकि पाकिस्तान की कुछ सैन्य तैयारियां न सिर्फ भारत को बल्कि पूरे विश्व को चिंता में डालने वाली हैं। भारतीय रक्षा मंत्रालय की सालाना रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान अपने परमाणु हथियारों और मिसाइलों में तेजी से इजाफा कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय आकलन के अनुसार पाकिस्तान के पास अभी 140–150 एटमी हथियार हैं, जबकि भारत के पास उससे

कम, ऐसे 130–140 हथियार ही हैं।

हथियार बढ़ाने की उसकी यह रफ्तार कायम रहती है तो यूरेनियम संवर्धन और प्लूटोनियम उत्पादन सुविधाओं के विस्तार से पाकिस्तान का परमाणु भंडार 2025 तक बढ़कर 220–250 तक हो जाएगा। स्वीडन की संस्था 'स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट' ने भी पिछले महीने अपनी रिपोर्ट में यही बात कही थी। इंस्टीट्यूट के परमाणु निरस्त्रीकरण, शस्त्र नियंत्रण और अप्रसार कार्यक्रम के निदेशक शेनन काइल ने बताया था कि दुनिया में परमाणु हथियारों का उत्पादन घटा है, लेकिन दक्षिण एशिया में बढ़ रहा है। उनके मुताबिक 2009 में भारत के पास 60–70 जबकि पाकिस्तान के पास करीब 60 परमाणु बम थे, लेकिन बीते दस वर्षों के दौरान दोनों देशों ने अपने परमाणु बमों की संख्या दोगुनी से ज्यादा कर ली है। पाकिस्तान अपना एटमी सशस्त्रीकरण भारत को ही ध्यान में रखकर करता है, लेकिन उसके हथियारों में बढ़ोतरी पूरी दुनिया को चिंता में डाल रही है। कारण यह कि उसकी स्थिति अन्य परमाणु शक्ति संपन्न देशों से बहुत अलग है। पाकिस्तान में सत्ता के कई केंद्र हैं। लोकतांत्रिक सरकार की हालत कमजोर है। फौज और आईएसआई अपने तरीके से फैसले करती रहती हैं, जबकि कट्टरपंथियों और आतंकियों की अपनी अलग ही सत्ता है।

ऐसे में यह आशंका जताई जाती रही है कि अगर ये हथियार आतंकियों के हाथ लग गए तो इसके भयावह परिणाम हो सकते हैं। पाकिस्तानी फौजी ठिकानों को ये आतंकी कई बार अपना निशाना बना चुके हैं। ऐसे में अकेला रास्ता यही बचता है कि पाक परमाणु हथियारों को किसी अंतरराष्ट्रीय संगठन की निगरानी में लाया जाए। यह पाकिस्तान की जनता के भी हित में होगा लेकिन इसके लिए विश्व बिरादरी को पाकिस्तान पर दबाव बनाना होगा।

सूडोकु नवताल-5172

मध्यम

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5171 का हल

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

शिवसेना का यह दांव उस पर उलटा पड़ेगा

अवधेश कुमार। महाराष्ट्र में जिस तरह शिवसेना, एनसीपी और कांग्रेस की सरकार बनने जा रही है, उसकी कल्पना चुनाव परिणाम आने तक कोई नहीं कर सकता था। शायद ही किसी को उम्मीद थी कि शिवसेना अचानक ऐसा तेवर अपना लेगी कि बीजेपी के हाथ में आ चुकी सत्ता उससे दूर हो जाएगी। मुख्यमंत्री पद की उसकी जिद को बीजेपी स्वीकार कर नहीं सकती थी और बीजेपी के नेतृत्व में सरकार का गठन बिना शिवसेना के संभव नहीं था। अब मुख्यमंत्री का पद शिवसेना को जरूर मिलने जा रहा है, लेकिन सबसे ज्यादा समझौता करने की विवशता उसकी ही होगी।

शिवसेना नेता संजय राउत के लिए शरद पवार जैसे मंजे हुए नेता की रणनीति को समझ पाना आसान नहीं था। पवार ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि शिवसेना बीजेपी के साथ पूरी तरह संबंध तोड़ने को बाध्य हो गई। आगे भी वह इसी तरह दबाव में रहेगी। भारत में ऐसी सरकारों के अपना कार्यकाल पूरा करने का इतिहास नहीं रहा है। तो सरकार कितने दिन चलेगी यह कहना कठिन है।